रात्रिक्लास 25/10/68 :– यह है ईश्वरीय नया परिवार इस विश्व पर, इस पुरुषोत्तम संगमयुग पर। इसको कहेंगे ईश्वरीय परिवार। ईश्वर को बाप कहा जाता है ना। तो यह है ईश्वरीय परिवार। फिर तुम होते हो दैवी परिवार। इनसे पहले थे आसुरी परिवार। जब आसुरी परिवार हैं तो इसके भेंट में ईश्वरीय परिवार भी है। बच्चे भी जानते हैं बरोबर हम ईश्वरीय परिवार के हैं। ऊँच ते ऊँच हैं हमारा बाप ईश्वर। टीचर भी ईश्वर, सद्गुरु भी ईश्वर। तो ईश्वरीय परिवार हुए ना। ईश्वरीय परिवार जानते हैं ऊँच ते ऊँच का यह ईश्वरीय गुप्त परिवार है। तुम ही जानते हो और कोई नहीं जानते हैं। ईश्वर के बच्चे वास्तव में हम सभी भाई–2 हैं; परन्तु यहाँ शरीर के साथ हो तो भाई–बहन ठहरे। ब्रह्मा के एडॉप्टेड बच्चे होने कारण तुमको ब्राह्मण कहा जाता है यह पवित्र रहने की युक्ति है। नाम ही है प्रजापिता ब्रह्मा कुमारी। तो जरूर देहधारी है ना। फिर विदेही हो तो शिवबाबा के सन्तान कहेंगे। फिर परिवार नहीं कहेंगे। सन्तान हो गये भाई भाई। हम आत्माएँ सभी भाई–2 हैं। बाप भी बैठा रहता है। वहाँ भाई भाई और बाप है। बाप समझा रहे हैं। यह समझानी तुमको कल्प–2 मिलता है। बाप बिगर और कोई दे न सके। भगवान ही आकर मुख से समझाते हैं। तो ईश्वरीय परिवार को कितना अथाह खुशी होनी चाहिए। हम ईश्वरीय परिवार के हैं। वह तो सतयुग के मालिक होंगे ना। ईश्वर सतयुग की स्थापना करते हैं। बच्चे जानते हैं हम ईश्वरीय परिवार के हैं। दैवी परिवार के बनने लिए पुरुषार्थ कर रहे हैं। रूहानी ज्ञान रूहानी बच्चों को सिवाय रूहानी बाप के कोई दे नहीं सकता है। यह नई बातें तुम सुनते हो। जब अन्दर में निश्चय होता है हम ईश्वरीय परिवार के हैं। भविष्य में सतयुगी दैवी परिवार के बनेंगे। तो खुशी होनी चाहिए ना। मुक्ति के लिए भक्तिमार्ग में कितना माथा मारते हैं। तुम बच्चे इस झाड़ के पहले–पहले शुरुआत में तुम जीवनमुक्ति में रहते हो। शुरुआत में थोड़े होते हैं। उनको सतोप्रधान कहा जाता है। तुम सतोप्रधान थे। जानते हो अभी सभी तमोप्रधान हैं। यह बातें दुनिया नहीं जानती। तुम भगवान के बच्चे हो ना। तुम बच्चे जानते हो हमने पूरा 84 का चक्र लगाया है। कल्प पहले भी जिनको निश्चय हुआ है अभी भी हो रहा है। यह चक्र फिरता रहता है। रिपीटेशन अक्षर अभी तुम सुन रहे हो। बाप पुरुषोत्तम संगम

युग पर ही सुनाते हैं। बस। फिर कब भी 5000 वर्ष में कोई से यह नालेज रचयिता और रचना के आदि,मध्य,अन्त की नहीं सुनेंगे। नहीं सुनेंगे नहीं सुनेंगे। कदाचित नहीं सुनेंगे। यह है ही रूहानी विद्या और तुम जिस्मानी विद्या पढ़ते हो। अच्छा सतयुग में तो जरूर शिक्षा मिलती है। वहाँ जिस्मानी शिक्षा मिलती है वा रूहानी? सतयुग में जिस्मानी नालेज मिलती है वा रूहानी नालेज मिलती है? अक्षर ही दो पूछता हूँ। कृष्ण को वहाँ रूहानी नालेज मिलती है वा जिस्मानी नालेज मिलती है? रूहानी बाप मिला ही है इस समय। जो रूहानी शिक्षा देते हैं। फिर तो जिस्मानी ही चलती है। रूहानी सिर्फ इस समय चलती है। देवताओं को इस नॉलेज का पता नहीं है। सिर्फ तुम ब्राह्मण ही जानते हो। जब कोई आकर ब्राह्मण बने तब सुने। वर्ण भी मुख्य है। जिनका चित्र भी भारत में है। सिर्फ वह रांग बनाते हैं। बाप आकर करेक्ट करते हैं। इस समय 100% इनकरेक्ट है; क्योंकि इरीलिजियस है। कितना भारत इनकरेक्ट हैं कुछ भी नालेज नहीं। बाप को सच कहा जाता है। पूछते हैं मैं जो समझाता हूँ विचार कर बताओ मैं राइट हूँ या नहीं। बाप राइट ही बताते हैं। राइट दुनिया स्थापन करते हैं।

बच्चे जानते हैं हम बिल्कुल अनराइटियस बन जाते हैं। फिर बाप आकर राइटियस बनाते हैं। राइटस को कोई गवर्मेन्ट थोड़े ही जानती हैं। शास्त्रों में तो ऐसे ही कहानी लिख दी है। जो सभी है झूठा सच की रत्ती भी नहीं। भक्त लोग सुनेंगे तो कहेंगे यह तो हमारे रामचन्द्र की निन्दा करते हैं। शास्त्रों की निन्दा माना रामचन्द्र की निन्दा। शास्त्रों की पढ़ाई को वह ज्ञान समझते हैं। बहुत शास्त्र जो पढ़ते हैं वह अथॉरिटी हैं। इस समय कलियुग में सभी हैं तमोप्रधान। शास्त्र में भी है भगवानुवाच जो अपन को ईश्वर कह पुजवाते हैं वह बड़े ही असुर हिरण्यकश्यप हैं। पढ़ते भी हैं; परन्तु विश्वास थोड़े ही करते हैं। दुनिया है अनराइटियस। राइटियस थी तो कितना सुख था।

सतयुग में बड़े सुखी रहते हैं। इस समय कितना दुख है। गाते भी तो हैं सुख–दुख, हार और जीत का खेल है; परन्तु सुख कब, दुख कब, हार कब, जीत कब यह समझे बिगर ही कह देते हैं। आपे ही पूज्य आपे ही पुजारी। बाप समझाते हैं हम बच्चों को दुखी नहीं करता हूँ। मैं तो राजयोग सिखलाकर चला जाता हूँ। बच्चे जानते हैं बाप इस कल्प के संगमयुग पर ही आते हैं। नई दुनिया की स्थापना पुरानी दुनिया का विनाश सामने खड़ा है। महाभारत लड़ाई कब लगी थी जब राजयोग सिखाया है। नई दुनिया में इनका राज्य होता है। तुम कहेंगे श्रीमत पर हम अपनी राजधानी स्थापन कर रहे हैं। बाप पढ़ाते हैं यह निश्चय है तो खुशी में रहना चाहिए ना। कितना सहज समझने का है मुँझने की तो बात ही नहीं। फिर भी बाबा कहते हैं कुछ भी बात हो तो पूछ सकते हो। नई को सतयुग पुरानी को कलियुग कहा जाता है। अभी तो सभी कहेंगे आयरन एजेड वर्ल्ड। यह नालेज और किसको मिलती ही नहीं है। ब्राह्मणों को ही मिलती है। पैर शूद्र और देवता के बीच में है चोटी ब्राह्मण। यह बाजोली है ना। इस नालेज को सिमरण करना है। हम 84 का चक्र फिरते हैं। हम सो ब्राह्मण, हम ब्राह्मण सो देवता, हम देवता सो क्षत्री, हम क्षत्री सो वैश्य, हम वैश्य सो शूद्र फिर हम शूद्र सो ब्राह्मण बनते हैं। तो बच्चों को खुशी होनी चाहिए ना। जैसे बैरीस्टर समझेंगे अभी बहुत पैसा कमाऊँगा। यह करूँगा। तुमको कितनी अथाह कमाई होती है। अभी तुम समझते हो राम कौन है, रावण कौन है। रावण है आधा कल्प का दुश्मन। तो बच्चों को ज्ञान का सिमरण कर सदैव हर्षित रहना चाहिए। कल्प कल्प ऐसे होता है नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार ड्रामा के प्लैन अनुसार। फिर कल्प कल्प यही रिपीट होगा।

अच्छा बाप को याद करेंगे तो टीचर को जरूर याद करेंगे। दिन प्रतिदिन तुम्हारी खुशी वृद्धि को पाती रहेगी। अभी इम्तहान में थोड़ा समय रह गया है। कलियुग अन्त और सतयुग के आदि का यह है पुरुषोत्तम संगम। जिस पर ही बाप आकर हम बच्चों को ज्ञान देते हैं। इस संगमयुग पर ही बाप से बेहद के सुख का वरसा मिलता है। तो अभी ऐसे बाप की याद में बैठो। जितना याद करेंगे उतना ही विकर्म विनाश होंगे और तुम सतोप्रधान बन जावेंगे। अच्छा रूहानी बच्चों को यादप्यार गुडनाइट और नमस्ते।